PRESS / MEDIA COVERAGE OVER BLW, VARANASI

जनसत्ता, लखनऊ (पृष्ठ सं.- 03)

दिनांक: 18.11.2022

बनारस रेल इंजन कारखाने ने एक साल में बनाए 367 इंजन

वाराणसी, 17 नवंबर (जनसत्ता)।

बनारस रेल इंजन कारखाने ने 365 दिनों में 367 रेल इंजनों को तैयार करके एक बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया है। बरेका में यह अब तक का सर्वाधिक निर्माण है। जहां 5 हजार कर्मचारियों ने अपनी मेहनत और लगन से इस लक्ष्य हासिल किया है।

1961 अगस्त में डीजल व विद्युत रेल इंजन कारखाने की स्थापना की गई थी। जनवरी 1964 में बरेका ने पहले रेल इंजन का निर्माण कर देश को समर्पित किया था।

1976 में पहले रेल इंजन तंजानिया को निर्यात किया गया। इसके बाद निर्यात का यह कारवां शुरू हो गया। बड़ी बात यह थी कि निर्यात के बावजूद भी इंजन को तैयार करने के लिए बरेका को अमेरिकी तकनीक के साथ-साथ अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी जैसे विदेशों पर उपकरणों व इंजन के पुर्जे के लिए निर्भर होना पड़ता था। लेकिन 2014 के बाद मेकिंग इंडिया के विचार से भारत में ही ज्यादातर उपकरणों को तैयार किया जा रहा है।

वर्तमान में बरेका में 8 हजार से ज्यादा इंजनों का निर्माण किया जा चुका है। यहां के बनाए हुए इंजन 11 देशों में भेजे जा रहे हैं। यही नहीं इस वित्तिय वर्ष में कुल 367 इंजनों का निर्माण बरेका में हुआ है।

इस बारे में जनसंपर्क अधिकारी राजेश कुमार ने गुरुवार को बताया कि बनारस रेल इंजन कारखान ने वित्तिय वर्ष 2021- 22 में एक नया कीर्तिमान तैयार किया है।

लोकोमोटिव कारखाने में इस वर्ष कुल 367 रेल इंजनों का निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया कि इन इंजनों को तैयार करने में लगभग 5 हजार कर्मचारी लगे हुए हैं। बरेका ने लगभग 172 इंजनों का निर्यात भी अलग-अलग देशों में किया गया।

इसमें तंजानिया को 15, वियतनाम को 25, बांग्लादेश 49, श्रीलंका 30, मलेशिया 01, सूडान 8, अंगोला 3, म्यांमा 29, सेंगल 04, मोजांबिक यू को 8, इंजन भेजे गए है। जनसंपर्क अधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि 98 फीसदी से ज्यादा सामान स्वदेशी हो चुके हैं।